

Vol 4 Issue 11 Aug 2015

ISSN No : 2249-894X

*Monthly Multidisciplinary
Research Journal*

*Review Of
Research Journal*

Chief Editors

Ashok Yakkaldevi
A R Burla College, India

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies,
Sri Lanka

Welcome to Review Of Research

RNI MAHMUL/2011/38595

ISSN No.2249-894X

Review Of Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial Board readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

Advisory Board

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Mabel Miao
Center for China and Globalization, China

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Xiaohua Yang
University of San Francisco, San Francisco

Ruth Wolf
University Walla, Israel

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Karina Xavier
Massachusetts Institute of Technology (MIT), USA

Jie Hao
University of Sydney, Australia

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

May Hongmei Gao
Kennesaw State University, USA

Pei-Shan Kao Andrea
University of Essex, United Kingdom

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Marc Fetscherin
Rollins College, USA

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Liu Chen
Beijing Foreign Studies University, China

Ilie Pintea
Spiru Haret University, Romania

Mahdi Moharrampour
Islamic Azad University buinzahra Branch, Qazvin, Iran

Nimita Khanna
Director, Isara Institute of Management, New Delhi

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Titus Pop
PhD, Partium Christian University, Oradea, Romania

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University, Kolhapur

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

J. K. VIJAYAKUMAR
King Abdullah University of Science & Technology, Saudi Arabia.

P. Malyadri
Government Degree College, Tandur, A.P.

Jayashree Patil-Dake
MBA Department of Badruka College

George - Calin SERITAN
Postdoctoral Researcher
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences
Al. I. Cuza University, Iasi

S. D. Sindkhedkar
PSGVP Mandal's Arts, Science and Commerce College, Shahada [M.S.]

Commerce and Arts Post Graduate Centre (BCCAPGC),Kachiguda, Hyderabad

Maj. Dr. S. Bakhtiar Choudhary
Director, Hyderabad AP India.

REZA KAFIPOUR
Shiraz University of Medical Sciences
Shiraz, Iran

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

AR. SARAVANAKUMARALAGAPPA
UNIVERSITY, KARAIKUDI,TN

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

C. D. Balaji
Panimalar Engineering College, Chennai

V.MAHALAKSHMI
Dean, Panimalar Engineering College

Bhavana vivek patole
PhD, Elphinstone college mumbai-32

S.KANNAN
Ph.D , Annamalai University

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary, Play India Play (Trust), Meerut (U.P.)

Kanwar Dinesh Singh
Dept.English, Government Postgraduate College , solan

More.....

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.ror.isrj.org

"नागार्जुन के काव्य में व्यंग्य"



बैवले ए. जे.

हिन्दी विभाग, मोरेश्वर महाविद्यालय भोकरदन, जि. जालना.



प्रारूपिक :

क बीर और निराला के बाद हिंदी काव्य साहित्य में व्यंग्यकार के रूप में नागार्जुनजी का नाम आता है। उनका व्यंग्य चुभता हुआ और धारदार तो है ही साथ ही उनकी पैनी नजर से कोई वर्ग बचा नहीं है। यथार्थ जीवन को चित्रित करने वाले वे जनवादी का सबसे अधिक सफल व्यंग्य कवि कहा जाता है। वास्तव में नागार्जुन का व्यंग्य बिल्कुल साफ और खुला है और उनके व्यंग्य में न तो कोई परदा है और न तो कोई खोट, उसमें है तो पैनापन विनोदी वृत्ति, करुणा और वक्त कथन का प्रभावी रूप। उनकी व्यग्यपूर्ण कविता को पढ़कर स्पष्ट होता है कि उनका व्यंग्य सच्चे जनवादी और जलहितैषी कवि का व्यंग्य है। उनकी व्यंग्य कविताओं में कबीर की तल्खी, भारतेंदु की करुणा और निराला की विनोदवक्ता का विलक्षण सामंजस्य है। अपने फकड़ स्वभाव और धुमंतू वृत्ति ने उन्हें बेफिक और बेबाक बना दिया था। देश की समस्याओं से जुझने की अद्भूत शक्ति भी उनमें थी। जनसाधारण से लेकर बड़े—बड़े राजनेता उनके अचूक व्यंग्य बाणों से बच नहीं सके हैं। नागार्जुन की कलम तमाम विसंगतियों पर अचूक प्रहार करती है। उनमें समसामयिक आकोश, असमजस, मोहभंग, विद्रोह और संघर्ष जैसी स्थितियाँ बार—बार प्रकट होती हैं। वे समकालीन विसंगतियों, जटिलताओं, अन्तविरोधों और व्यापक विकृतियों के बीच जनसाधारण के दुःख—दर्द को टटोलते हैं। अपने धारदार व्यंग्य के लिए इनकी अनेक कविताएँ आज एक ऐतिहासिक महत्व रखती हैं।

अपनी कविताओं में उन्होंने भ्रष्ट शासकों, साम्राज्यवादी राजनेताओं, पाखंडी और झूठे कार्यकर्ताओं तथा कर्तव्य से भगाने वाले लोगों पर कटु व्यंग्य किया है। राजनीति का कोई ऐसा पहलू नहीं जो उनकी तीक्ष्ण दृष्टि से बचा हो। उन्होंने वर्तमान युग की भ्रष्ट राजनीति और राजनेताओं पर करारा व्यंग्य किया है। राजनीतिक भ्रष्टचार और नेताओं पर जितना व्यंग्य नागार्जुन ने किया है, उतना किस अन्य ने नहीं किया। भ्रष्ट राजनीति और राजनेताओं को लेकर नागार्जुन ने कई सारी व्यंग्यपूर्ण कविताओं की रचना की है। उनकी प्रारंभीक कविताओं में नेहरू युग, गौंधी युग की पहचान मिलती है तो इधर की कविताओं में इदिरा युग, जनता शासन काल, लोकतांत्रिक उथल—पुथल, राजनीतिक हिंसा भ्रष्टचार, अंध सत्तावाद तथा राजनीति की जनविरोधी नीतियों का हाल—चाल अकित है। वर्तमान युग में राजनीति का स्वरूप इतना गंदा हो चुका है कि एक दूसरे के कट्टर शत्रु कब एक—दुसरे के मित्र बन जाए कह नहीं सकते। जयप्रकाश आन्दोलन में नागार्जुन ने बढ़—चढ़कर भाग लिया था उसके विफल होने पर उनकी वाणी का स्वर और भी धारदार हो गया। तुमने कहा था पुरानी जूतियों का कोरस संग्रहों की कविताओं में राजनीतिक विसंगतियों पर तीक्ष्ण व्यंग्य देखते ही बनता है—

"ओं दलों में एक दल अपना दल, ओम
ओं अंगीकरण शुद्धिकरण, राष्ट्रीयकरण
ओं मुष्टीकरण, तुष्टिकरण, पुष्टिकरण
ओं एजराज, आक्षेप, अनुशासन
ओं गददी पर आजीवन वज्रासन
ओं द्रिव्यूनल ओं आश्वासन।"

नागार्जुन अपने प्रखर व्यंग्य से तथ्यों को उभारते हैं। पण्डित नेहरू के राजत्व काल में इंग्लैड की रानी एलिजाबेथ भारतयात्रा पर आयी थी। उनके स्वागत को तैयारी में व्यस्त कॉग्रेसियों पर व्यंग्य करते हुए नागार्जुन ने लिखा था—

"आओं रानी, हम ढोएंगे पालकी

“नागार्जुन के काव्य में व्यंग्य”

यही हुई है राय जवाहरलाल की।²

स्वार्थी और अवसरवादी नेताओं पर जो व्यंग्यात्मक कविताएँ कवि ने लिखी हैं, उसमें युगीन सत्य की अभिव्यक्ति हुई है। उन्होंने खुलकर कॉग्रेसी नेताओं पर व्यंग्य किया है। यहाँ तक कि पंडित नेहरू भी उनके व्यंग्य से बचे नहीं उन्हीं को लक्ष्य करके यह कवि कहता है कि देश का महान से महान नेता भी आज विदेशी सत्ता के आगे हाथ जोड़ रहा है। कवि कहता है—

“वतन बेचकर पंडित नेहरू फूले नहीं समाते हैं
बेशर्मी की हद है, फिर भी बातें बड़ी मानते हैं
अंग्रेजी, अमेरिकी जौंकों की जमात में है शामिल
फिर भी बापू को समाधि पर झुक झुक फूल चढ़ाते हैं।”³

स्वातंत्र्य भारत के प्रथम प्रधानमंत्री नेहरू किस प्रकार से पूँजीवादी देशों के प्रभाव प्रधानमंत्री नेहरू किस प्रकार से पूँजीवादी देशों के प्रभाव में आ रहे इसका चित्रण इस कविता में कवि ने किया है। कवि को यह स्वीकार नहीं कि स्वाधीन भारत के प्रधानमंत्री विश्व की किसी सत्ता के सम्मुख हाथ फैलाकर खड़े रहें।

व्यंग्य की जितनी मार्मिकता तथा तीखापन नागार्जुन की कविताओं में है उतना अन्य किसी प्रगतिवादी कवि में नहीं है। उनकी तेज निगाहें प्रायमरी स्कूल के शिक्षक को भी नहीं बकशीं जो मार-पीटकर; ‘आदम’ के सांचेगढ़ रहा है। प्रायमरी शिक्षक को स्थिति को बिना किसी लागलपेट के उजागर करनेवाली ‘मास्टर’ कविता का व्यंग्य है—

घुन खाए शहतीरों पर की
बारहवडी विधाता बांचे
फटी भीत है, छत चूती है
आलों पर बिस्तुइया नाचे
लगा—लगा बैबस बच्चों पर
मिनट—मिनट पर पांच तमाचे
इसी तरह से दुखरन मास्टर
गढ़ता है आदम के सांचे।”⁴

व्यंग्य नागार्जुन के साहित्य की बहुत बड़ी शक्ति है। कबीर की तरह उनके यहाँ व्यंग्य जन्मजात संस्कार के रूप में हैं। उनमें अदभूत प्रतिभा है, उससे भी बढ़कर साहस है। किसी भी राजनीतिक प्रसंग पर सहज ढंग से छंद रचने वाले नागार्जुन दो बातों में निपुण नजर आते हैं। एक तो बड़े प्रतिष्ठित राजनेताओं का प्रतिभा—भंजन और दुसरी और व्यवस्था का विरोध नागार्जुन स्थितियों से समझौता करना नहीं जानता, सत्ताधारियों के तलुए चाटना उसे कर्तई पंसद नहीं, इन सबसे विवरित पाखंडी और स्वार्थी नेताओं की बेनकाब करने में वे तत्पर दिखाई देते हैं। कॉग्रेस की बुर्जुआ, पाखण्डी राजनीति को बेनकाब करती उनकी व्यंग्य — रचनाओं में शक्ति और धार दोनों अपने प्रखरतम रूप में हैं—

“इंदूजी इंदूजी, क्या हुआ आपको? भूल गई बाप को?”⁵

देश में कॉग्रेसी नेता किस प्रकार से झूठ पर झूठ बोलकर इस देश की भोली—भाली जनता को दिशाभूल कर रहे थे इसका बड़ा ही यथार्थ चित्रण नागार्जुन ने कई स्थान पर किया है। नागार्जुन की व्यंग्योक्ति इस देश के आम आदमी को इसलिए प्रभावी करती है कि उसमें जो व्यंग्य है वह स्वप्न जाल था काल्पनिक नहीं है। उसमें जीवन का यथार्थ है। कवि ने अपने अँखों से जो देखा है उसे ही कविता में व्यक्त किया है। कॉग्रेस जनों को ही अपने तीखे व्यंग्य का लक्ष्य कर यह कवि कहता है—

“ कॉग्रेस जन तो लेणे कहिए, जे पीर अपनी जाए रे
पर दुख में अपना सुख साधें, दया भाव न आए रे
तीन भुवन मा ठगे सपी को, शरम ना राखे केनी रे
टोपी – कृता–धोती खददर, धन धन जननी तेनी रे।”⁶

जीवन के तथ्यों से भरा हुआ ऐसा व्यंग्य नागार्जुन के अतिरिक्त किसी अन्य कवि की कविता में नहीं मिलेगा। इस देश की भोली भाली जनता को देश के नेतागण झूठे सपने दिखाकर उन्हें त्याग और बलिदान की भाषा में उपदेश करते हैं। जबकि यह नेतागण स्वयं स्वार्थ और मतलब से परिपुर्ण हैं। गांधीजी का नाम लेना और उनके नाम पर वोट बटोरना कॉग्रेसयों की अपनी मजबूरी है। क्योंकि इन नेताओं के पास अब कुछ ऐसा बचा नहीं जिसका आधार लेकर जनता से वोट माँगते। इन नेताओं ने ऐसा कुछ किया ही नहीं कि जिससे जनता इनकी या इनके कार्यों की प्रशंसा करे। नेताओं के चरित्र ऐसे रहे नहीं जिससे उनके प्रति जनता के आदर का भाव निर्माण हो। यह नेतागण अपनी लाज—लज्जा सभी कुछ छोड़ चुके हैं। नेताओं की बेशर्मी की हद का वित्रण करते हुए कवि ने कहा है—

“नागार्जुन के काव्य में व्यंग्य”

“गांधीजी का नाम बेचकर बतलाओ कब तक खाओगे?

यम को भी दुर्गंधि लगेगी, नकर भला कैसे जाओगे?
दिल—दिमाग है रहेन, शासन का फिर क्यों कर काम चलेगा?
पब्लिक नहीं उठेगी तो, अब कौन तुम्हारा काम मलेगा? ।”⁷

स्वातंत्रता – प्राप्ति के बाद गांधीजी के सिध्दातों की धार्जियाँ उड़ाने में राजनेताओं ने कोई कसर बाकी नहीं रखी—उनके तीनों बंदर पर तीक्ष्ण वार करती ये पंक्तियाँ—

“प्रेम पगे है, शहद सने है तीनों बंदर बापू के
गुरुओं के भी गुरु है तीनों बंदर बापू के
सौवी बरसी रहे है तीनों बंदर बापू के
बापू को ही बना रहे है तीनों बंदर बापू के ।⁸

ये पंक्तियाँ गांधीजी के मूल्यों के पतन को बेनकाब करती है। चुटकुला या विनोदिका लिखने में वे माहिर हैं और बहुत से पाठक उनके इसी गुण के मुरीद हैं। सन 1970–71 के आसपास देश की प्रगतिशील शक्तियों इन्दिरा गांधी को समाजवाद की मसीहा के रूप में देख रही थी तब उनकी पैनी दृष्टि उसके भीतर जन्म लेते फासिस्ट स्वरूप को बेनकाब करती है। छब्बीस जनवरी और, पन्द्रह अगस्त जैसी ऐतिहासिक तिथियों पर से भी नागार्जुन की आस्था उठ जाने का एकमात्र कारण है शोषण सत्ता का परिवर्तित रूप प्रजातंत्र की आड़ में सामंतवादी यथावत विद्यमान है।

जिस समय देश में आपातकाल घोषित किया गया था उस समय और उसके बाद जिस थोड़े बहुत कवियों ने बड़े साहस के साथ आपातकालिन स्थितियों का विरोध किया उनमें सबसे अधिक बुलंद आवाज नागार्जुन की ही थी। उस काल में इस कवि ने तानाशाही के विरोध में जितनी कटु यंग्यात्मक कविताएँ लिखी उतनी किसी अन्य कवि ने नहीं। यह इस कवि का ही साहस था जिसने साफ—साफ कहा—

“इंदूजी इंदूजी क्या हुआ आपको
सत्ता के मद में भूल गई बाप को ।”⁹

इस कविता में किसी व्यक्ति का विरोध न होकर तानाशाही प्रवृत्ति का विरोध था। जिसे इस जनवादी कवि ने कविता के माध्यम से जनता तक पहुँचाया। समकालीन कविता में जनवादी कविता के माध्यम से उन्होंने जिस पतनशील राजनीतिक रिथ्टियों का विचारण किया वह यथार्थ को ही व्यक्त करने वाली है। इस समय नागार्जुन की एक और कविता ‘कालीमाई’ बड़ी चर्चित रही। इस कविता में नागार्जुन ने बिल्कुल स्पष्ट रूप से इंदिरा गांधी पर व्यंग्य किया है—

“मुँडमाला के लिए गरीबों पर निगाह है
धनपतियों के लिए दया की खुली राह है
कितना खुन पिया है जाती नहीं खुमारी
सुर्ख और लंबी है मैया जीभ तुम्हारी ।”¹⁰

देश में बढ़ते हुए तानाशाही के रूप को देखकर यह कवि भीतर ही भीतर व्याकुल होता है। पर व्याकुल होकर खामोशी से सबकुछ सह लेना नागार्जुन की फितरत नहीं है। देश की राजनीतिक व्यवस्था और सत्ता के केंद्रित हो जाने के परिणाम को इस कवि ने पहले ही भांप लिया था। नाहक ही की डर गयी हूजूर कविता में वे अधिकारीयों के जीवन पर व्यंग्य करते हैं। जनता की सुख—सुविधा हेतु जितनी योजनाएँ बनती है वह सब मात्र शासकीय कार्यवाहियों होती है जो पृष्ठों में अंकित रहती है। विकास की योजनाएँ पृष्ठों पर जन्म लेकर मृतप्राय हो जाती हैं और भूख से कुचले ग्रामवासी विषमता में अपनी माटी छोड़कर शहरों की ओर उन्मुख होते हैं। यथार्थ से परे समाचार पत्र अपने कार्या का सम्पादन करते हैं। कृषि की अभूतपूर्व उन्नति प्रसारित करते हैं और इस प्रकार देश की कृषि का विकास असेम्बली की छत पर होता है—

“कागज पर खेती होती कमल हुई हरफार
छोड रहे हैं गाँव खेत मजदूरों के परिवार।
कृषि विकास की खबरे प्रतिदिन छाप रहे अखबार
असेम्बली की छत पर फसले उगा रही सरकार।”¹¹

इस प्रकार नागार्जुन यथार्थ रिथ्टि का विचारण करते हैं।

“नागार्जुन के काव्य में व्यंग्य”

उपसंहार –

अपनी व्यंग्यपूर्ण कविताओं में नागार्जुन हमेशा सामाजिक परिवर्तन की बात कही है और सामाजिक परिवर्तन में इस देश के मजदूर, किसान और श्रमिकों के संघटन को सबसे अधिक महत्व दिया है। उनके लिए जनता का हित ही सबौपरि है। उनके कटु से कटु व्यंग्य में राजनीति के महत्व की पुरी और गंभीर समझ है। सामाजिक असमानता, धार्मिक रुढ़ियाँ, फैशन-परस्ती, राजनितिक भ्रष्टचार से सब कुछ नागार्जुन की व्यंग्य की नोक पर आये हैं। नागार्जुन ने किसी को माफ नहीं किया। उनके व्यंग्य का लक्ष्य व्यक्ति-विशेष न होकर तत्कालीन स्थितियाँ हैं। उनके व्यंग्य में कई स्तर हैं, कई तेवर हैं। कहीं उसमें उपसंहासवृत्ति प्रमुखता पाती है, कहीं प्रहारात्मक तेवर प्रबल हो जाता है तो कहीं उलाहना या फटकार नजर हाती है और कहीं उसमें करुणा का स्वर घुल-मिल जाता है। जनवादी काव्यधारा के इस प्रतिनिधि ने जनवादी विचारधारा को ही आत्मसात कर अपनी व्यंग्यपूर्ण शैली में जो कुछ कहा है वह समकालीन कविता का सर्वोत्कृष्ट व्यंग्य सिद्ध हुआ है यही कारण है कि उनकी कविताएँ अपने समय के यथार्थ का सजीव वित्रण करती हैं। वे हिंदी व्यंग्य काव्य में एकमात्र सबल सशक्त प्रतिनिधि हैं, व्यंग्य के विभिन्न स्तरों से उनकी कविता सजी हुई है। आधुनिक हिंदी में श्रेष्ठ व्यंग्य की परंपरा स्थापित करनेवाले जनसाधारण के सच्चे हिसैषी नागार्जुन का काव्य हिंदी जगत की अमूल्य धरोहर है।

संदर्भ –

- 1.नागार्जुन— मंत्र-कविता— प्रतिनिधि कविताएँ संपा.—नामवर सिंह — पृ— 111
- 2.नागार्जुन— आओ रानी, हम ढोएंगे पालकी, जनकवि— संपा. विजयबहादूर सिंह — पृ— 122
- 3.नागार्जुन— इस गुब्बारे की छाया में — पृ— 62
- 4.नागार्जुन— मास्टर, प्रतिनिधिक कविताएँ संपा. नामवरसिंह — पृ— 110
- 5.डॉ. रामरवरुप चतुर्वेदी, हिंदी साहित्य और संवेदना का विकास
- 6.नागार्जुन— इस गुब्बारे की छाया में — पृ— 64
- 7.नागार्जुन— हजार हजार बौहों वाली — पृ— 84
- 8.नागार्जुन— तीनों बंदर बापु के, प्रतिनिधि कविताएँ संपा. नामवरसिंह पृ—110
- 9.नागार्जुन — चुनी हुई कविताएँ पृ—146
- 10.नागार्जुन — चुनी हुई कविताएँ पृ—146
- 11.नागार्जुन— हजार हजार बौहों वाली — पृ— 133

Publish Research Article International Level Multidisciplinary Research Journal For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project, Theses, Books and Books Review for publication, you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed, India

- * Directory Of Research Journal Indexing
- * International Scientific Journal Consortium Scientific
- * OPEN J-GATE

Associated and Indexed, USA

- DOAJ
- EBSCO
- Crossref DOI
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Database
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database

Review Of Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005, Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.ror.isrj.org